

140  

---

34 (A-C)

980  

---

38

अथ  
भावनापानिषद् ।  

---

Bhavanopaniṣad



140  
३५५

॥ भाव नो धनिव  
शरत् माहिः ॥ ४८ ॥



संज्ञे च वाक् पाणि पाद पायुष स्थ वि कारः ॥ कामाकर्षण्यादिषो श शक्त  
यः ॥ अ च नादानम मन वि स र्गानं द हानो पाश नोपे का स्थ ब्र ह्म यो नं ग  
कु सु मा हिं श क्त यो यो ॥ उषा अ लं वु धा क हार वि भ्वो दरी वरुं जा इ स्ति  
जि ह्मा य शो व ती गां धारि किं पुरुषां शं वि नी सर स्व ती इ डा पि ग ल्ता  
सु षु म्ना चे ति त्व तु र्द श ना ड यः ॥ स व सं क्रो मि ण्या दि च तु र्द श श क्त  
यः ॥ पा णा पा न व्या नो दो न स मा न ना ग क र्म ह क र दे व द त्थ नं ज य इ ति  
द रा व य वः ॥ स व सि द्धि प्र द दि व हिं द श द दे व ता ॥ भू त वा य द श को प  
धि सं स र्गो पा धि ने द त्वे न रे च कः पा च को शो ष णो द द न क्क व न इ ति पा  
ण मु र्खे त्वे न यं च वि धो जा ठ रा ग्ति र्भव ति ॥ क्कार उ द्गार कः ॥ को न को  
नो इ को र्भ क इ ति ॥ अ पा न प्रा ण्य न्ये न यं च वि धा स्ते म नु ष्या णा



ना०

॥२॥

हे इगाः॥ ना० कृत्वा चोष्य पेयात्मकं चतुर्विधमन्नं पाचयति॥ एतद्दृश  
कवद्विकलासंज्ञादेवता अंतर्दृशारगाः॥ शीतोष्णसुरवदुखेष्टाः॥ सत्त्व  
रजस्तेजागुणाः॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधाः यंचतन्मात्राः॥ पंचपुष्प  
वाणाः॥ मनइंद्रधनुः राग पाशाः॥ द्वेषांकुशः॥ अथक्त अहंकारमवा  
तत्वमिति॥ कामेश्वरीकुले श्वरी भगमातिन्यातस्त्रिकोणादे  
वताः॥ श्रद्धा निरुप्राधिकी सापि देवताः॥ सहानंदपरिपूर्णा  
सैव परदेवताः॥ सलिल निधि सौ हित्यकराणं॥ एतस्य सव  
स्य विष्णु शेनान्येन च तत्त्वं न च सिद्धिः॥ भावनायां च कृत  
मुपचारः॥ सत्त्वं नस्ति नास्ति कर्तव्यमि कर्तव्यमुदासीन  
यमिति विकल्पना॥ आत्म निधि कल्पनं होमः॥ भावना

नो०

॥२॥

ना०

॥३॥

यां विषयानामभेदभाव नञ्जी चपुञ्ज नञ् कृतर्पणं॥ पंच तिथि  
रूपत्वेन कालस्य परिणामावलोकनं पंचदशनित्याः॥ एवं मुहु  
त्रयमुहूर्तद्वयमुहूर्तमात्रं घटिका मात्रा भावना पराजीव  
न्मुक्तो भवति॥ तस्य देवता तैव्यं संसिद्धिः॥ चितितकाया  
राययत्ने न सिध्यति॥ स एव शिवयोगीति निगद्यते॥ कादिहा  
हिमतोक्तो न भावनाः प्रतियादिताः॥ य एव वेद॥ ७॥ इत्युपनि  
षत्॥ सहनाववत् सहनो भू नक्तु सवीर्यं करवामहे॥ तेजस्वि  
नामहीतमस्तु मायि दिषामही॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः  
इदं पुस्तकं भानोपनिषत्॥ वैजनाथेन लिखितं॥ ७॥ ७॥

नो०

॥३॥



75

1890

$\triangle$

*[Faint, illegible markings or bleed-through from the reverse side of the page.]*

140

110

100



- ॥ ननु प्रविभक्तिनामेतिस्मिन्नस्त्रे धातुवर्जितं च  
 ॥ र्थवच्चद्वयस्य मितिकुतो लभ्यते यानि सत्रोपा  
 ॥ तानि पदानि तान्येव खलु वृत्तौ विवक्ष्यते अत्र  
 ॥ त्रे प्रविभक्तिरुता वनमात्रं वर्तते त्वित्ते पदद्वय  
 ॥ कुतो लभ्यते तत्राह प्रविभक्तपदेन असमा सो वर्त  
 ॥ ते तेनैव पदद्वयं लभ्यते अत्र विभक्तिपदं तां त्रिकिं ना  
 ॥ तां त्रिवंशकृत्ता ल्यो छुट संयोगेनोच्चारिति मनेका  
 ॥ र्थबोधकं तं त्रं अत्र विभक्तपदस्यार्थद्वयं मन्यते तेनैव  
 ॥ धातुपदं लभ्यते ॥ द्वौ नञे च समाख्यातो परं उदाश प्र  
 ॥ ज्यैके परं उदाशस्य द्विग्राहि प्रश्नस्य तु निषेधकत्वं अत्र  
 ॥ परं उदाशो नञवर्तते तेनैव शाद्रिष्यमर्थवत्वेनाग्रह्य  
 ॥ ते



॥ श्रीछेत्रपंठरपुर ॥

॥ श्रीमंतमहाराजगोब्राह्मन ॥

॥ प्रलिपालकराजासाहेबजु ॥

॥ रामप्रसादजु ॥ ४

॥ एलेअश्रितानुवर्तीगोविंद ॥

॥ गुसाईगिवालेकरकेअशि ॥

॥ वदिमहाराजकेकरवसमा ॥

॥ चारभलेचाहियेतापीछे ॥

॥ इहाकेभलेअग्यालेप्रया ॥

न ॥ नकीनोतादिते श्रीछेत्रमे ॥

॥ जजमानकोअभिष्टचित ॥

॥ नकरकेकरवरूपेहेश्रीछेत्र ॥

॥ निवासकेहितजोमहाराज ॥



॥नेजीविकाकरदुईसोइहा॥

॥पहुचेंतेप्राश्रितकोजीवन॥

॥होयगोयाकीबिनतीपहिले॥

॥महाराजसोकरकेंअभयव॥

॥रदानलेकेश्रीचरनकोरु॥

॥खदेखतहेताकीबिनतीपं

॥श्रीशिवलालजूमिअज॥

॥करेगोसालगुदस्ताकेपन्या॥

॥सरुपेय्याबाकीरहेओरसा॥

॥लमजकूरआरवरभयो॥

॥सोमहायजकूविसरनहोय॥

॥राजश्रीदादाबालाजीइन॥

140  
34 (८)

॥कोमनसंतोरवतेमहाराजका॥

॥मंगलहोयश्रीदेवीनिरंतर॥

॥सहायकरेयहआशिर्वाद॥